Nai Dunia (Indore), 16th May 2022, Page – 02

सेमीकंडक्टर क्लस्टर के लिए आइआइटी इंदौर करेगा काम

अवसर ● सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग मंत्री कर चुके बैठक

गजेंद्र विश्वकर्मा ● इंदौर

सेमीकंडक्टर को लेकर भारत ताईवान, चीन, साउथ कोरिया, जापान और अन्य देशों पर निर्भर रहता था, लेकिन अब भारत सरकार ने इसे लेकर बड़ी कोशिश शुरू कर दी है। देश में सेमीकंडक्टर तैयार हो सके, इसके लिए सरकार संस्थानों से इसे लेकर काम करने की अपील कर रही है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर इस पर काम शुरू करने जा रहा है।

पिछले महीनों में आइआइटी इंदौर के अधिकारियों और प्रदेश सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग मंत्री ओमप्रकाश सकलेचा के बीच इस संबंध में दो बैठक हो चुकी है और अब जून में तीसरी बैठक होगी। सेमीकंडक्टर को लेकर प्रदेश में क्या काम हो सकता है और इसके लिए प्रदेश में कहां क्लस्टर बनाया जाए, इस पर मोहर लग सकती है।

सांसद शंकर लालवानी ने भी आइआइटी के प्रोफेसर को सेमीकंडक्टर क्लस्टर को लेकर 13 मई को इंदौर में होने जा रहे स्टार्टअप सम्मेलन में प्रस्ताव मंगाया है। आइआइटी इंदौर की ओर से सेमीकंडक्टर क्लस्टर पर मध्यस्थता कर रहे प्रोफेसर डा. संतोष विश्वकर्मा का कहना है कि भारत सरकार सेमीकंडक्टर के लिए ईकोसिस्टम बनाने के लिए 76 हजार करोड़ रुपये खर्च करेगी। यह बड़ी राशि है और यह सही समय है, जब मध्य प्रदेश को इसके लिए काम शुरू कर देना चाहिए।

क्या है सेमीकंडक्टर चिप

सेमीकंडक्टर एक विशेष तरह का पदार्थ होता है। इसमें विद्युत के सुचालक और कुचालक के गुण होते हैं। ये विद्युत के प्रवाह को नियंत्रित करने का काम करते हैं। इनका निर्माण सिलिकान से होता है। कुछ विशेष तरह के तत्व मिलाए जाते हैं, ताकि सुचालक के गुणों में बदलाव लाया जा सके। इसी पदार्थ का उपयोग करके विद्युत सर्किट चिप बनाया जाता है। कई हाईटेक उपकरणों में इसे इंस्टाल किया जाता है। सेमीकंडक्टर चिप के माध्यम से ही डाटा की प्रोसेसिंग होती है। इस

कारण इसको इलेक्ट्रानिक डिवाइस का दिमाग भी कहा जाता है। कार, मोबाइल से लेकर सैटेलाइट तक में इसका उपयोग होता है। कुछ समय पहले सेमीकंडक्टर की कमी के कारण देश में कारों के निर्माण पर असर पड़ा था।

भारत को आत्मनिर्भर बनाएगा मध्य प्रदेश

सांसद शंकर लालवानी ने कहा कि प्रदेश में सेमीकंडक्टर क्लस्टर स्थापित करने के लिए हमने कोशिश शुरू कर दी है। इस क्षेत्र में हमारे पास विशेषज्ञ मौजूद हैं। आइआइटी इंदौर पहले से इन विषयों पर काम करता रहा है और उसकी देखरेख में क्लस्टर स्थापित किया जा सकता है। मंत्री सकलेचा का कहना है कि आइआइटी इंदौर के प्रोफेसरों से इस बारे में लगातार बात चल रही है। कुछ ही दिनों में तय कर लिया जाएगा कि इसे लेकर क्या काम किया जाना है? सेमीकंडक्टर प्लांट स्थापित करने में टाटा जैसी कंपनी भी उत्साहित है। उन्हें भी आइआइटी इंदौर के साथ जोड़कर काम शुरू किया जा सकता है।